हेलेन केलर का
दोस्त कुत्ता
होली बैरी

हेलेन केलर का सबसे अच्छा दोस्त एक कुत्ता था जिसका नाम बेले था!

हेलेन केलर का जब जन्म हुआ तो वो एक स्वस्थ बच्ची थी. लेकिन एक गंभीर बीमारी ने उसे अंधा और बहरा बना दिया. शिक्षक ऐनी सुलिवन की मदद से, हेलेन ने संवाद करना सीखा. बहुत से लोगों के अनुसार वो काम एकदम असंभव था. जब हेलेन ने ब्रेल पढ़ना, सांकेतिक भाषा का उपयोग करना और यहां तक कि बोलना भी सीखा तब वो पूरे राष्ट्र के लिए प्रेरणा बनीं. उनका सबसे प्रिय मित्र एक कुत्ता था जिसका नाम बेले था!

इस उल्लेखनीय पुस्तक परिचय में आपको हेलेन की चमत्कारी और प्रेरक यात्रा का पता चलेगा और साथ में आप उनके प्रिय कुत्ते के बारे में भी जानेंगे.

हेलेन केलर का जन्म 27 जून 1880 को अलबामा के टस्कुम्बिया में आइवी ग्रीन नाम के एक फार्म पर हुआ था. वो एक सुंदर बच्ची थी. जब वो छह महीने की थी, तब उसने बात करना शुरू कर दिया था. अपने पहले जन्मदिन पर वो आसानी से चल सकती थी.

लेकिन छह महीने बाद, हेलेन को तेज़ बुखार आया और वो बहुत बीमार पड़ी. उसने अपनी दृष्टि और सुनने की क्षमता खो दी. फिर हेलेन की दुनिया एकदम सूनी और अंधकारमय हो गई.
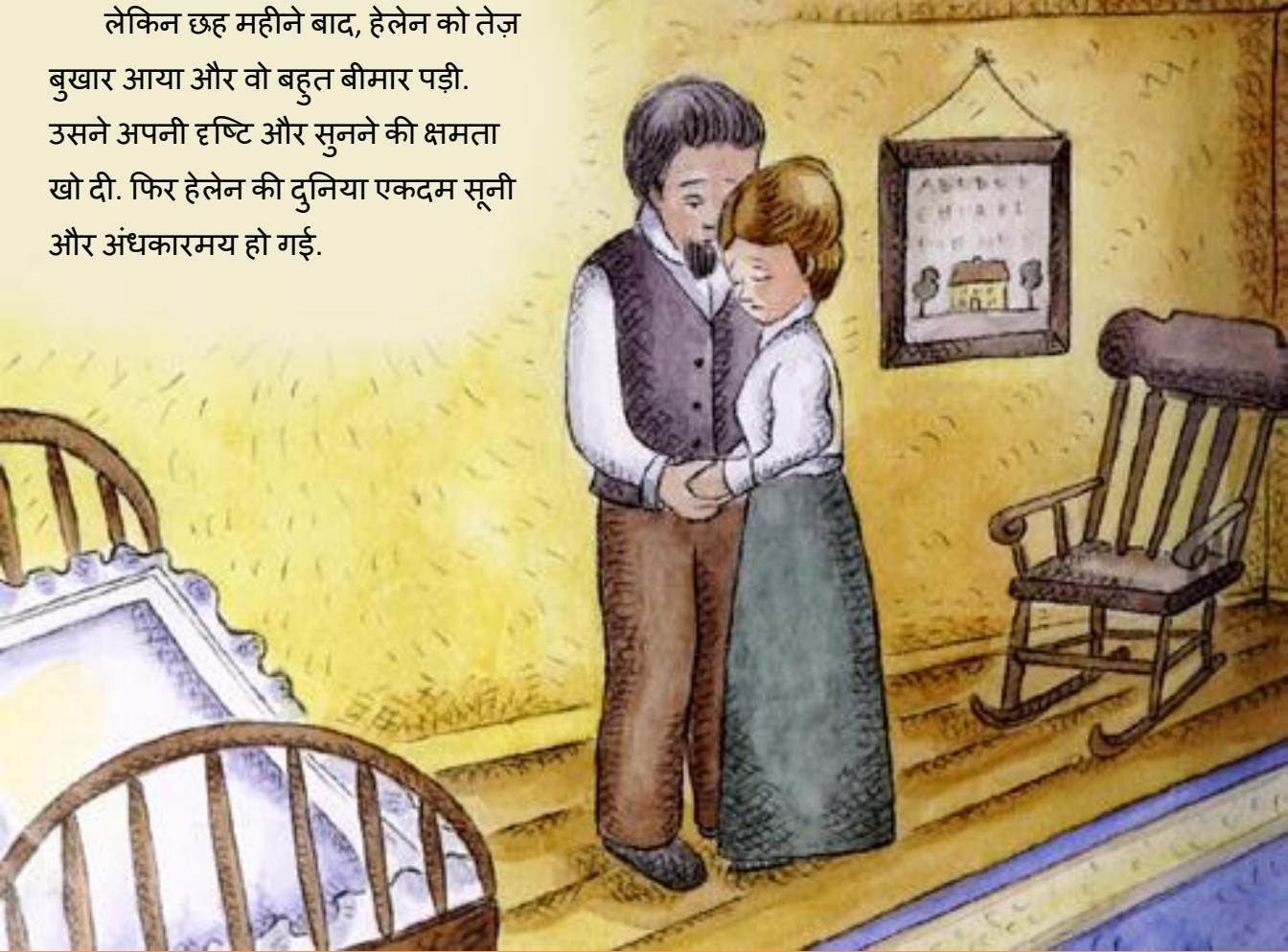
अब वो अपने माता-पिता तक से बात नहीं कर सकती थी. वो उन शब्दों को भी भूल गई जो उसने पहले सीखे थे. हेलेन को यह नहीं पता चलता था कि वो चीज़ों को कैसे समझे. वो क्या सोचती और महसूस करती थी उसे उसका भी कोई भान नहीं था. अकेला होने के कारण अब वो डरने लगी थी.
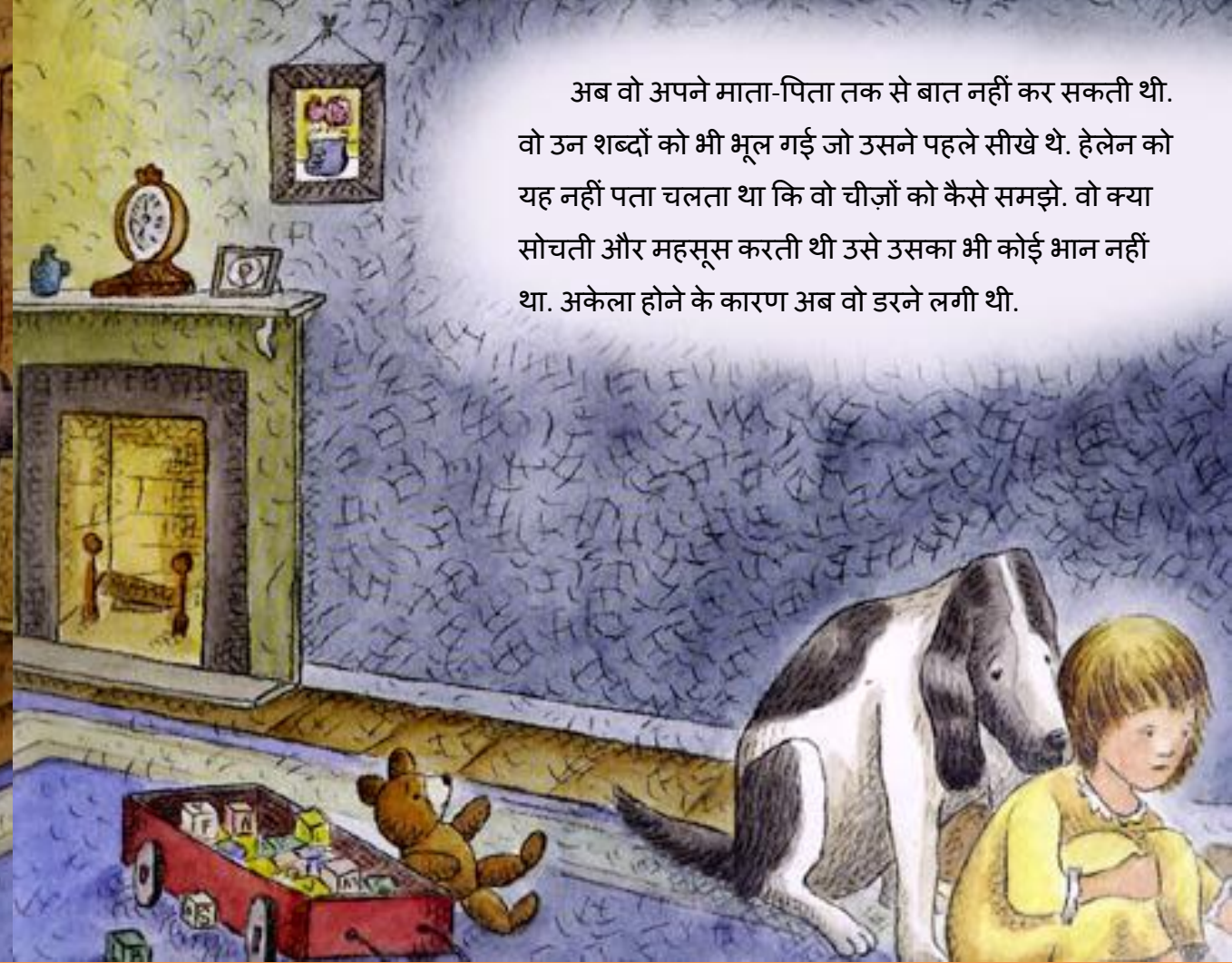
अक्सर, हेलेन को केवल उसके कुत्ते ही आराम देते थे. वे कोमल और स्नेही थे.

हेलेन, कुत्तों को देख, सुन या उनसे बात नहीं कर सकती थी. पर इससे कुत्तों को कोई फर्क नहीं पड़ता था. जब भी वो उन्हें छूने के लिए बाहर निकलती थी, वे हमेशा उसके पास होते थे. हेलेन के कुत्ते उसके समर्पित साथी बन गए थे.
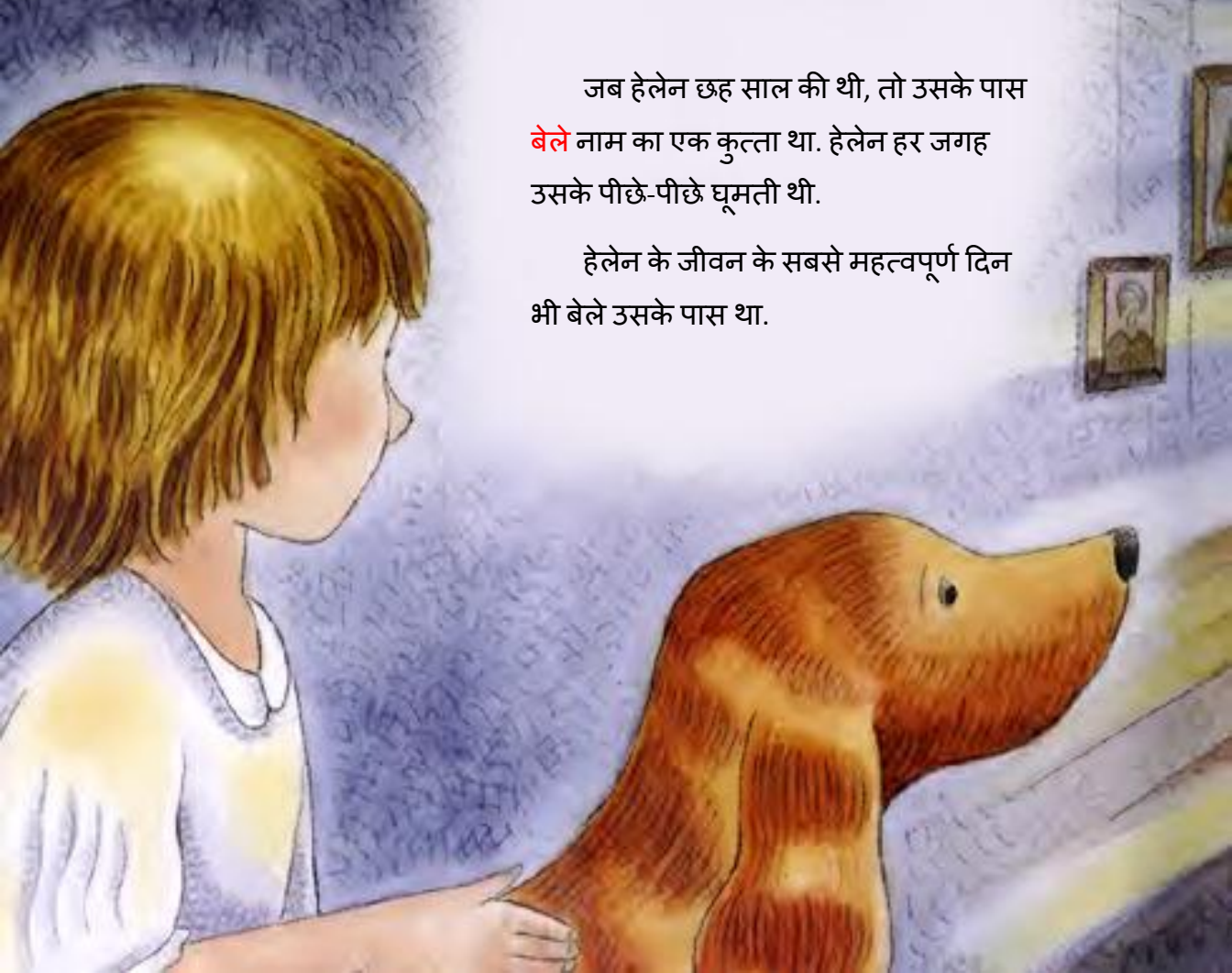
जब हेलेन छह साल की थी, तो उसके पास बेले नाम का एक कुत्ता था. हेलेन हर जगह उसके पीछे-पीछे घूमती थी.

हेलेन के जीवन के सबसे महत्वपूर्ण दिन भी बेले उसके पास था.
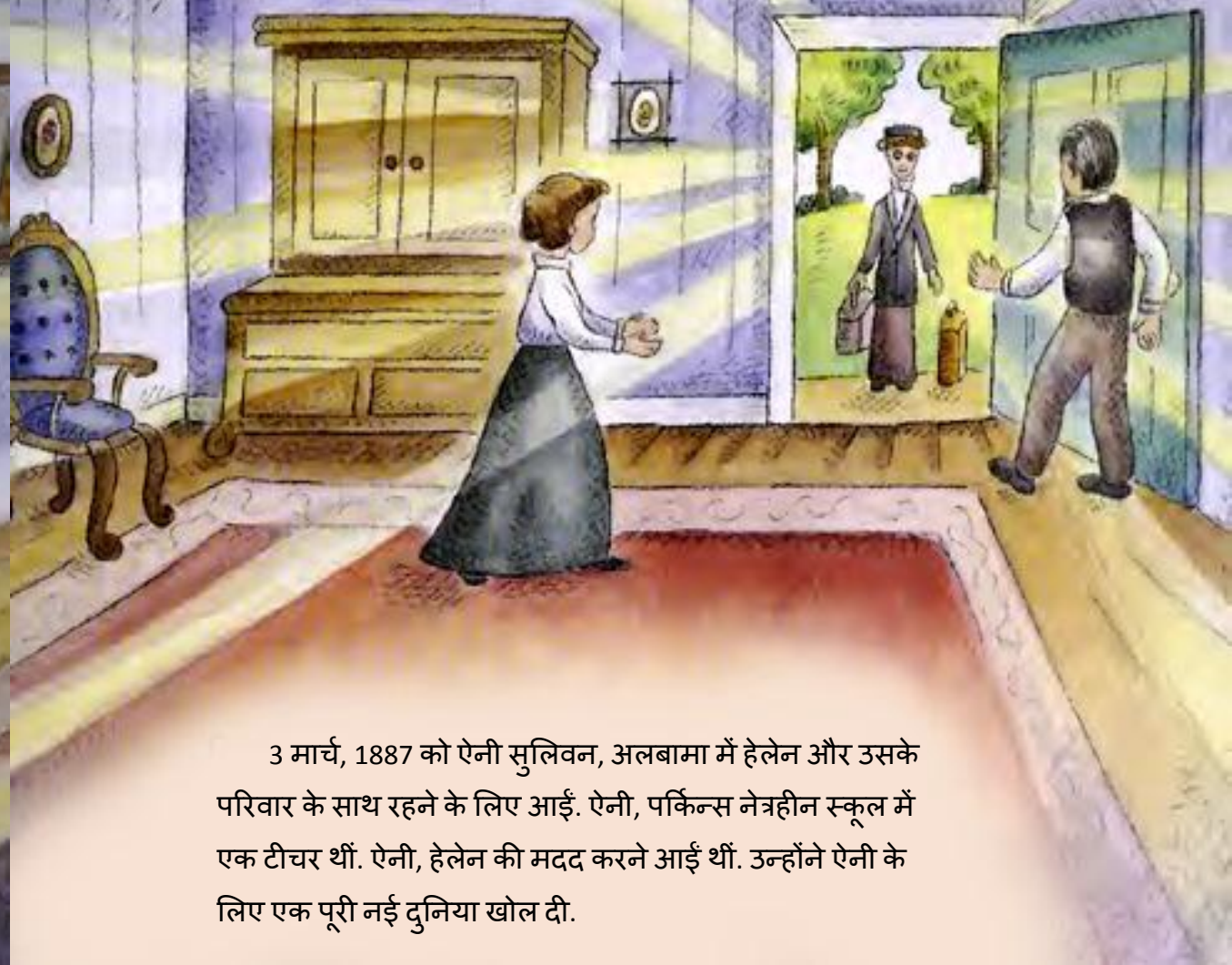
3 मार्च, 1887 को ऐनी सुलिवन, अलबामा में हेलेन और उसके परिवार के साथ रहने के लिए आईं. ऐनी, पर्किन्स नेत्रहीन स्कूल में एक टीचर थीं. ऐनी, हेलेन की मदद करने आईं थीं. उन्होंने ऐनी के लिए एक पूरी नई दुनिया खोल दी.

हेलेन ने ऐनी की हथेली में अपनी उंगली से शब्द लिखकर उसके साथ संवाद करने की कोशिश की. पहले तो हेलेन को शब्दों का मतलब समझ में ही नहीं आया.

ऐनी ने हेलेन को एक गुड़िया दी और उसकी हथेली पर अपनी ऊँगली से लिखा d-o-l-l (डॉल यानि गुड़िया).

फिर उन्होंने ऐनी को एक टोपी दी और लिखा h-a-t (हैट यानि टोपी).

हेलेन को वो बस एक खेल लगा.

एक दिन ऐनी ने एक पंप से बहते पानी के नीचे हेलेन का हाथ पकड़कर रखा. फिर उन्होंने ऐनी की हथेली में w-a-t-e-r (वॉटर यानि पानी) लिखा.
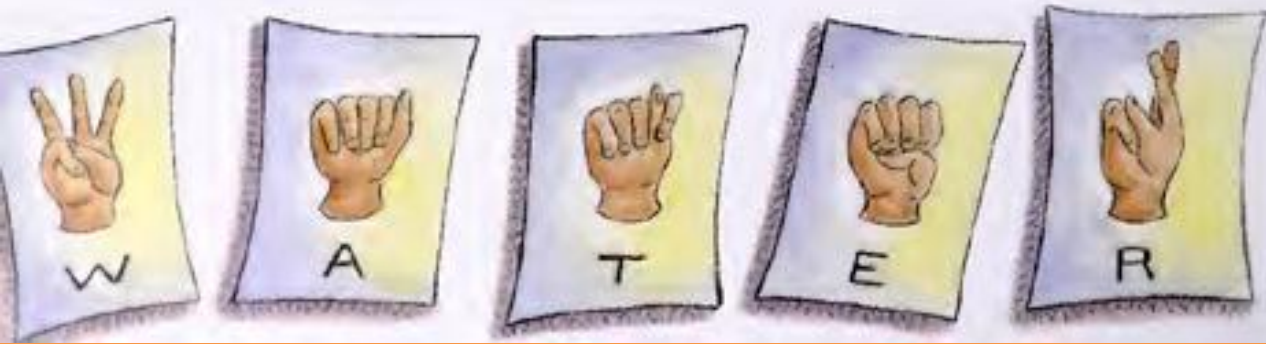
अंत में हेलेन को समझ में आया कि पानी ठंडा था जिसे वो अपने हाथ में बहते हुए महसूस कर रही थी. पहली बार हेलेन हथेली पर लिखे शब्दों और असली पानी के बीच में रिश्ता जोड़ पाई!
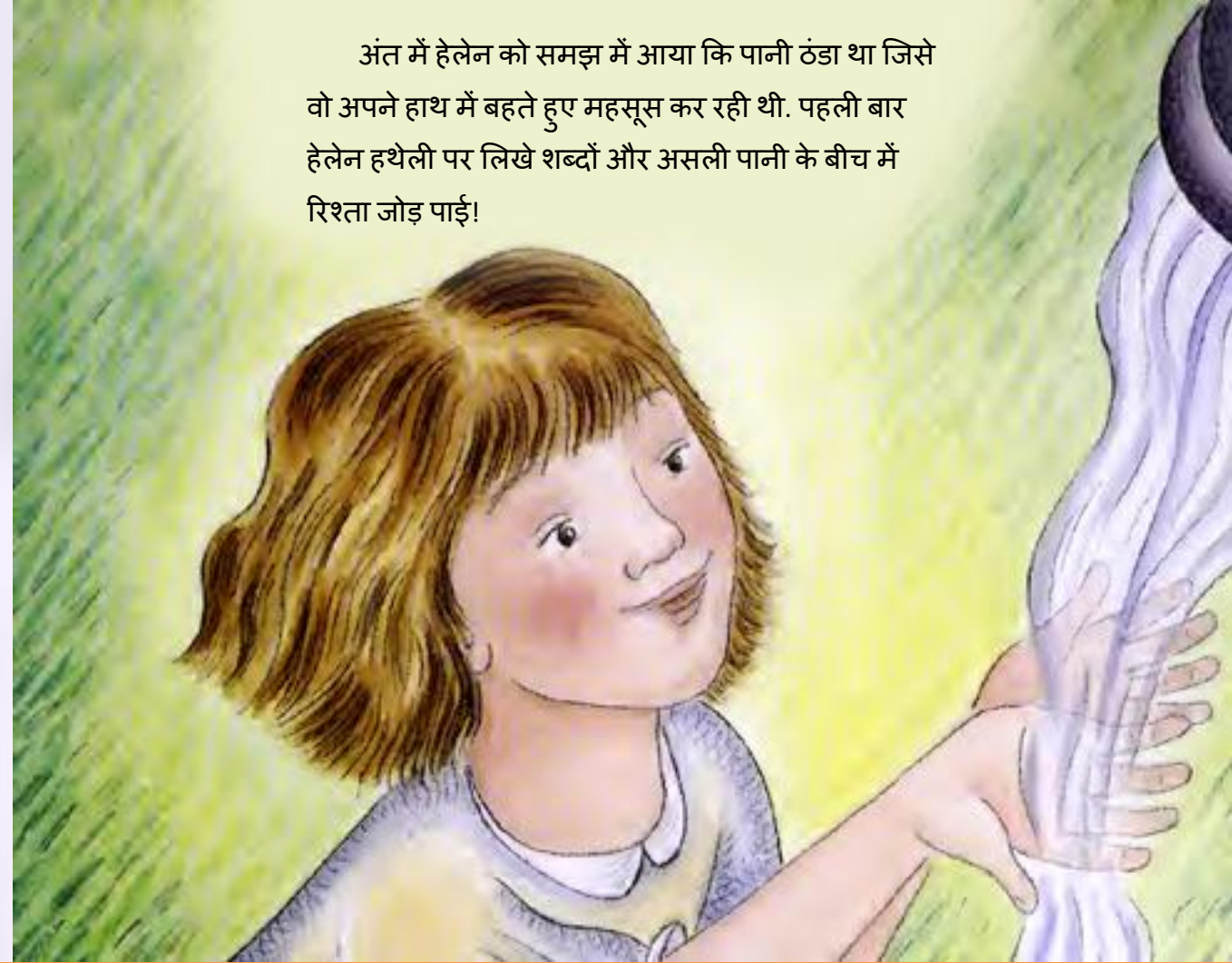
जिस क्षण हेलेन ने अपना पहला शब्द सीखा, तब से उसकी स्याह और अँधेरी दुनिया प्रकाश से भर गई. उसने उसी दिन तीस नए शब्द सीखे.

हेलेन ने बेले के छोटे पंजे में भी शब्द लिखने और उसे सिखाने की कोशिश की. लेकिन बेले, हेलेन की पढ़ाई समझ नहीं पाया. लेकिन हेलेन ने उसके साथ बहुत समय बिताया जो बेले को पसंद आया. बेले अभी भी बैठे हुए अपनी पूंछ हिला रहा था जबकि हेलेन सभी नए सीखे शब्दों की वर्तनी (स्पेल्लिंग्स) का अभ्यास कर रही थी.

हेलेन ने कई सबक घर के बाहर सीखे. हेलेन और ऐनी, बेले के साथ मिलकर जंगल में लंबी सैर के लिए जाते थे. वहां पर ऐनी, हेलेन को खुद चीज़ें खोजने के लिए प्रोत्साहित करती थी.

एक सुबह हेलेन, ऐनी को खोजने के लिए ऊपर दौड़ती हुई आई. वो काफी उत्साहित थी. हेलेन ने "डॉग-बेबी" (कुत्ते के पिल्ले) कहा और फिर अपनी पांचों उंगलियाँ दिखाईं. ऐनी को समझ नहीं आया कि हेलेन उसे क्या बताना चाह रही थी.

फिर हेलेन, एनी का हाथ पकड़कर उसे बाहर ले गई. घर के पिछले हिस्से में एक माँ कुतिया लेटी थी. उसने तभी पाँच छोटे-छोटे पिल्ले जने थे!

जब हेलेन ने पिल्लों का नरम फर छुआ, तब ऐनी ने हेलेन को "पिल्ला" शब्द सिखाया. हेलेन ने प्रत्येक पिल्ले की ओर इशारा किया, और फिर ऐनी ने "पांच पिल्ले" गिने.

एक पिल्ला दूसरों की तुलना में छोटा था. हेलेन ने छोटे पिल्ले को उठाया और कहा "छोटा". उसके बाद ऐनी ने "बहुत छोटा" कहा. जब पिल्लों ने शोर मचाना शुरू किया तो हेलेन हँस पड़ी और फिर वो पूरी दोपहर उनके साथ ही खेलती रही.

जब हेलेन हजारों शब्द सीख गई तब ऐनी ने उसे ब्रेल का उपयोग करना सिखाया. ब्रेल, नेत्रहीनों के लिए लिखे शब्दों को पढ़ने का एक तरीका है. ब्रेल में उभरी हुई बिंदियों के नमूनों का उपयोग होता है जो वर्णमाला के अक्षरों और संख्याओं को दर्शाते हैं.

फिर हेलेन ने अपनी उंगलियों से ब्रेल की बिंदियों को महसूस करके पढ़ना सीखा.
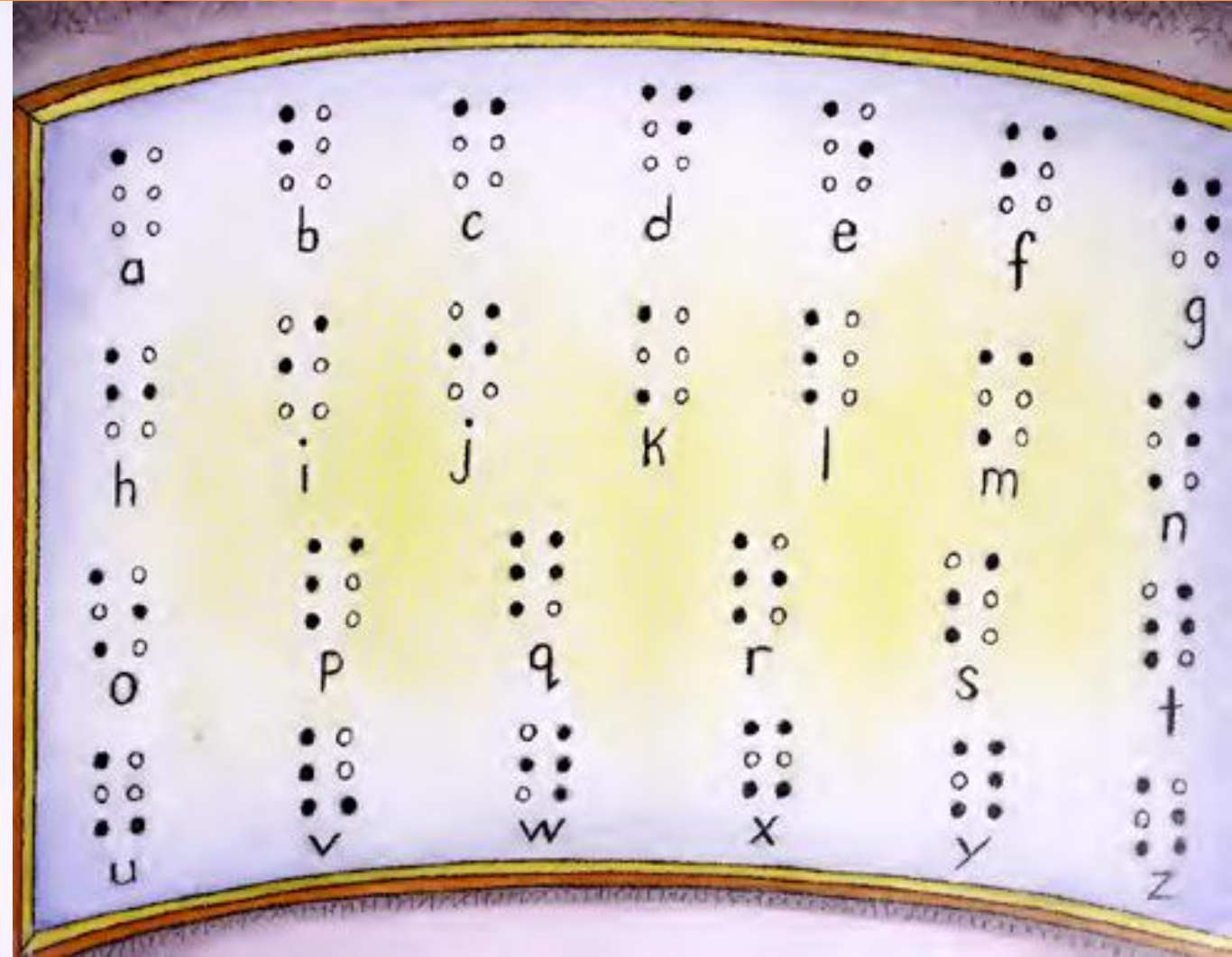
जब हेलेन दस साल की हुई तो वो अपने मुंह से बोलना सीखना चाहती थी ताकि हर कोई उसकी आवाज़ समझ सके.

1890 के वसंत में ऐनी, हेलेन को मिस सारा फुलर से मिलवाने के लिए बोस्टन ले गईं. मिस फुलर, बहरे बच्चों के लिए स्थापित होरेस मान स्कूल की प्रिंसिपल थीं.

मिस फुलर ने हेलेन को आवाज का उपयोग करके बोलना सिखाने की कोशिश की. जब मिस फुलर बोलतीं तो हेलेन उनके मुंह को हल्के से छूकर महसूस करती थी. फिर हेलेन उस शब्दों को दोहराती थी. हेलेन के लिए यह काम काफी कठिन था क्योंकि वो न तो टीचर की आवाज़ सुन सकती थी और न ही उनके मुंह को देख सकती थी.
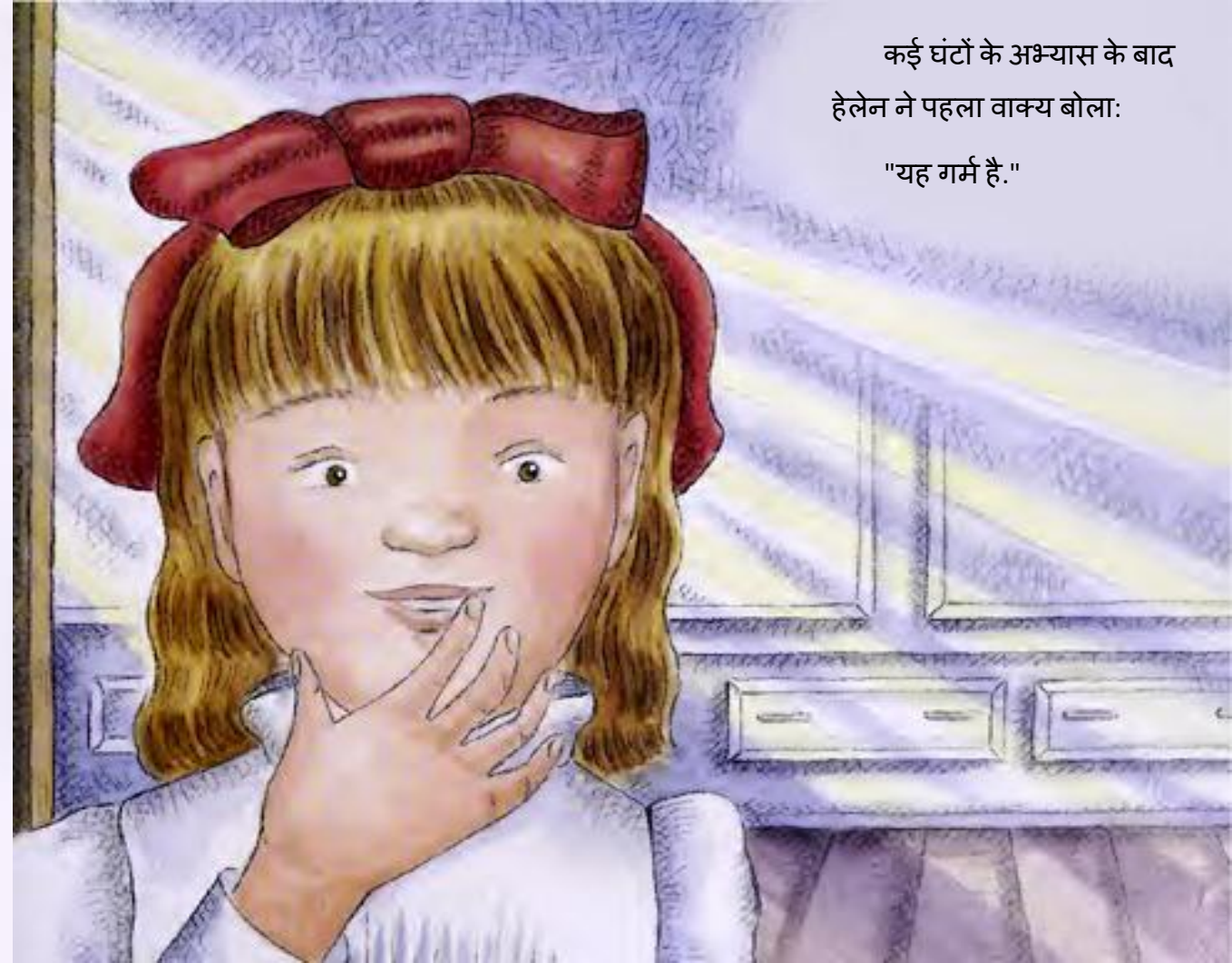
कई घंटों के अभ्यास के बाद हेलेन ने पहला वाक्य बोला:

"यह गर्म है."

जब ऐनी और हेलेन वापिस घर लौटे तो उन्हें हेलेन की माँ, पिता और छोटी बहन मिल्ड्रेड ने बधाई दी.

हेलेन ने अपने कुत्ते को आवाज़ देकर बुलाया, "आओ, बेले!"

बेले, हेलन के पास दौड़ा-दौड़ा आया और उसने उसका हाथ चाटा. उस क्षण हेलेन की ज़िंदगी, खुशी से भर गई. अब बेले भी उसकी आवाज़ को समझ सकता था!

हेलन को कुत्तों से आजीवन प्यार रहा. जब वो बच्ची थी, तो उसके परिवार में त्रिश नाम का एक कुत्ता था. हेलन का पसंदीदा बेले - एक आयरिश कुत्ता था.

"द स्टोरी ऑफ माय लाइफ" में, हेलेन ने लिखा कि बेले उसका निरंतर साथी रहा और उसने कुत्ते को शब्दों के हिज्जे सिखाने के लिए कड़ी मेहनत की थी. ऐनी सुलिवन ने भी कुत्तों के प्रति हेलेन के स्नेह को महसूस किया. अलबामा आने के दो महीने बाद, ऐनी ने अपने एक दोस्त को पत्र लिखा जिसमें उन्होंने हेलन के पिल्लों की खोज की खुशी का वर्णन किया.

कई वर्षों बाद, रेडक्लिफ कॉलेज में हेलेन के सहपाठियों ने उसे परीक्षा पूरी करने के लिए इनाम में एक बोस्टन टेरियर कुत्ता दिया. हेलेन को वो कुत्ता बहुत पसंद आया और उसने उसका नाम फिज रखा.

1937 में, जब हेलेन जापान में भाषण देने गयीं, तो उन्हें "अकिता" नस्ल का एक जापानी कुत्ता पसंद आया. कुत्ते के मालिक ने हेलेन को एक कुत्ता उपहार में दिया. हेलेन ने कुत्ते को कामिकेज़-गो नाम दिया. हेलेन, अमेरिका में अकिता नस्ल का कुत्ता लाने वाली पहली व्यक्ति बनीं.

कामिकेज़-गो जल्द ही अपने भाई, केनज़ान-गो के साथ मिला. दोनों कुत्तों के प्रति हेलेन के दिल में एक विशेष स्थान था.

अपने पूरे जीवन के दौरान हेलेन ने ग्रेट डेंस, मास्टिफ, जर्मन शेफर्ड, बोस्टन टेरियर, बुल टेरियर्स, अकितास, स्कॉटिश टेरियर्स, डैशुनड्स, और मिश्रित नस्लों के कुत्ते पाले. हेलेन ने अपने प्यारे कुत्तों के साथ कई फोटो भी खिंचवाए.

हेलेन ने कुत्तों को उनके बिना शर्त प्रेम, वफादारी और साहचर्य के लिए चाहा. कुत्तों ने उन्हें जीवन भर खुशी दी. हेलेन ने अपनी आत्मकथा में लिखा, "मेरे कुत्ते दोस्त,मेरी सीमाओं को समझते हैं, और जब मैं अकेली होती हूँ तो वे हमेशा मेरे करीब रहते हैं. मुझे उनके स्नेहपूर्ण तरीके और उनका पूंछ हिलाना पसंद आता है. उनके खेल और दोस्ती मुझे बहुत सकून देती है."

1900 में, हेलेन ने कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स में रेडक्लिफ कॉलेज में पढ़ाई की. कक्षाओं में टीचर जो भी कहते ऐनी उसे हेलेन की हथेली पर लिखती थीं. कॉलेज में रहते हुए, हेलेन ने अपनी आत्मकथा, "द स्टोरी ऑफ माय लाइफ" लिखी. यह किताब 1903 में प्रकाशित हुई और दुनिया भर में खूब बिकी. एक साल बाद, हेलेन ने सम्मान के साथ स्नातक की डिग्री प्राप्त की. वो किताब लिखने वाली और कॉलेज डिग्री हासिल करने वाली पहली बहरी और नेत्रहीन इंसान बनीं.

फिर हेलेन ने अपने जीवन के बारे में लिखना और व्याख्यान देना शुरू किए. उन्होंने ऐनी के साथ मिलकर देश भर में यात्रा की और बहरे और अंधे बच्चों को शिक्षित करने के लिए भाषण दिए. हेलेन ने अंधे बच्चों के लिए बेहतर स्कूल और पुस्तकालयों की हिमायत की.

1936 में ऐनी की मृत्यु के बाद, हेलेन ने एक अन्य साथी के साथ अपनी यात्रायें जारी रखीं. उन्होंने विकलांग लोगों के लिए जागरूकता फ़ैलाने और धन जुटाने के लिए 39 देशों का दौरा किया. उन्होंने विकलांगों के अधिकारों - बेहतर शिक्षा, अधिक अवसर और रोजगार दिलाने के लिए काम किया. हेलेन ने नेत्रहीनों के लिए अमेरिकन फाउंडेशन के साथ 40 से अधिक वर्षों तक काम किया. उनकी सेवा के लिए उन्हें कई पुरस्कार मिले. 1964 में, राष्ट्रपति लिंडन जॉनसन ने उन्हें "प्रेसिडेंशियल मेडल ऑफ़ फ्रीडम" से नवाज़ा, जो किसी भी अमेरिकी नागरिक को मिलने वाला सर्वोच्च सम्मान है.

हेलेन ने 81 साल की उम्र तक काम किया. छह साल बाद, जून 1968 को, नींद में सोते हुए उनकी मृत्यु हुई. हेलेन एक उल्लेखनीय महिला थीं जिन्होंने जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए अपना जीवन समर्पित किया. वो आज भी लाखों लोगों के लिए एक प्रेरणा हैं.